आपदाएं : प्राकृतिक एवं मानवीय

प्रभात कुमार
रुड़की।

मानव ने ही प्रकृति के इस स्वरूप को बिगाड़ा है
प्रकृति के इस सुंदर उपवन को उजाड़ा है,
कभी यहाँ भी अमन और शांति हुआ करती थी,
परन्तु अब
हर तरफ केवल मानव का हाहाकार ही नजर आता है।।

आपदा क्या है? ऐसी घटना जो सामाजिक पर्यावरण का ह्रास करती है। लोगों की प्रतिरोध करने की सामर्थ्य से अधिक हो तथा बाहरी सहायता की माँग करती हो, आपदा कहलाती है। आपदाएं जन–जीवन को अस्त–व्यस्त कर देती हैं और शायद हम तो इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकते कि आपदाओं से हमें कितनी हानि होती है? आपदाएं प्राकृतिक होती हैं। प्रकृति द्वारा ही उत्पन्न की जाती है तथा इनमें कोई भी मानवीय हस्तक्षेप नहीं होता। मैं इस बात से बिल्कुल भी सहमत नहीं हूँ कि आपदाएं पूर्ण रूप से प्राकृतिक होती हैं। आज आपदाओं के घटित होने के पीछे मनुष्य का भी हाथ है। मनुष्य ने ही तो प्रकृति को विनाश की कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है। हम देख रहे हैं और सुन भी रहे है चारों ओर आपदाएं व्याप्त हैं। कहीं बाढ़, कहीं भू–स्खलन, कही सूखा तो कही बादलों का फटना। हमारी पृथ्वी पर चारों और त्राही–त्राही मच रही है। आज लगभग संपूर्ण विश्व आपदाओं से ग्रसित है मान्यवर, मैं तो ये ही कहूंगा कि कहीं न कहीं इन आपदाओं का कारण मानव भी है। वर्तमान में विकास की इस अंधी भागदौड में हम इतने स्वार्थी हो गए हैं की मात्र हित साधन के लिए हमने अपनी इस स्वर्ग सी भूमि को शमशान बनने की कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है। भूकंप, भू–स्खलन, हिमस्खलन आदि पूर्ण रूप से प्रकृति की ही देन है। इसमें मानव का कोई दोष नहीं है। यूँ तो बाढ़ एक प्राकृतिक आपदा है परन्तु क्या आप सबने कमी यह सोचा कि इस आपदा के घटित होने का क्या कारण है। सारे दिन हम खबरों में सुनते हैं कि आज जम्मू–कश्मीर तो कल कहीं ओर में बाढ़ आई आज जंगल समाप्त होते जा रहे हैं चूंकि हम मानव दिन–प्रतिदिन वृक्ष काटते ही जा रहे हैं। यह तो हम सब जानते है कि वृक्ष मिट्टी को बांधे रखते हैं जिससे पानी का बहाव कम होता है। अब आप सब स्वयं ही सोचिए जब वृक्ष ही नहीं होंगे, तो पानी बिना किसी रूकावट के मैदानों में पहुंचकर बाढ़ का ही तो रूप धारण करेगा? जबकि हम सब यह भली–भांति जानते हैं कि इसमें मनुष्य का भी तो हस्तक्षेप है।

हमारे लोभ का ही तो परिणाम है। जिसने इस महाकाल को जन्म दिया है। पहाड़ी क्षेत्रों में आए दिन भू–स्खलन की घटना का घटित होना भी तो मानवीय क्रियाओं का ही एक परिणाम है। जब जंगल ही नहीं होंगे, तो मृदा कैसे संरक्षित रह पाएगी? ऐसी स्थिति में तो वह अपने स्थान से ढ़लानों के रूप में खिसककर भू–स्खलन को ही तो जन्म देगी। तो फिर हम यह कैसे कह दें कि आपदा प्रकृति प्रदत्त है। जबकि भू–स्खलन के घटित होने के कारण खनन है।

जब हम प्रकृति के साथ छेड़छाड़ कर रहे हैं, तो फिर आने वाली आपदाओं का कारण पूर्ण रूप से प्राकृतिक कैसे? हम भी इन आपदाओं में बराबर के भागीदार हैं। वर्तमान में हमने अपनी उन्नति के लिए कारखानें और फैक्ट्रियां स्थापित कर तो लिए हैं परन्तु हम यह नहीं जानते कि जब हम प्रकृति का दोहन कर रहे हैं तो भविष्य में हम सबको इसका परिणाम आपदाओं के रूप में भुगतना पड़ेगा। मैं अपने विषय को आगे बढ़ाते हुए क्या अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए आप सभी के समक्ष एक और आपदा का विवरण देना चाहूंगा। जो हैं–हिमस्खलन। यह भी भू–स्खलन के समान ही एक आपदा है जो ठंडें–बर्फीले प्रदेशों में घटित होती रहती हैं। यूं तो यह भी एक प्राकृतिक आपदा है परन्तु महोदय, आप सब इस बात पर विचार कीजिए कि बड़े–बड़े हिमखंड क्यों

पिघलकर खिसक रहे हैं? क्या कारण है कि दिन–प्रतिदिन बड़े–बड़े ग्लेशियर खिसक रहे हैं? इसका कारण कोई और नहीं बल्कि स्वयं मानव द्वारा आमंत्रित की गई वैश्विकृत आपदा ग्लोबल वार्मिंग हैं, जिससे पृथ्वी का तापमान निरंतर बढ़ता जा रहा है। हम सब अपने दैनिक जीवन में रेफ्रिजरेटर, ए.सी. जैसे सुख–सुविधा से पूर्ण साधनों का प्रयोग करते हैं, जिनसे सीएफसी जैसी हानिकारक गैसें, निष्कासित होकर वातावरण में मिल जाती हैं।

अब आप स्वयं ही विचारिए जब हम मनुष्य ही ऐसे हानिकारक उपकरणों का प्रयोग करके अपनी प्रकृति को स्वयं अशुद्व कर रहे हैं, तो फिर आपदा के लिए कहीं न कहीं हम भी तो उत्तरदायी हैं। वैज्ञानिक शोधों से यह भी प्रमाणित हो गया है कि ग्लोबल वार्मिंग के कारण वर्ष 2050 तक हमारी पृथ्वी अर्द्वजलमग्न हो जाएगी। इन सब तथ्यों से तो ये ही सिद्व होता है कि भले ही आपदाएं प्रकृति की देन हो, परन्तु मानवीय हस्तक्षेप भी आपदाओं के कारण बने हैं। हमने स्वयं ही अपने विनाश को आमंत्रित किया है। अतः इन महाविनाशकारी आपदाओं का जिम्मेदार हम केवल प्रकृति को नहीं ठहरा सकते जबकि हम सब यह जानते हैं कि प्रकृति का दुरूपयोग भी हम ही कर रहे हैं। मेरी दृष्टि में तो मानव अब वह राक्षस बनता जा रहा है जिसकी स्वार्थ और लोभ रूपी भूख कभी शांत ही नहीं होगी और वह अपनी इस भूख का भोजन हमारी प्रकृति को ही बनाएगा। आज हमें यह समझने की आवश्यकता है कि जब हम प्रकृति का उपभोग कर रहे हैं। उसका दोहन कर रहे हैं तो उसके दुरूपयोग से उत्पन्न होने वाली आपदाएं केवल प्रकृति द्वारा निर्मित नहीं हैं बल्कि इनमें कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में हमारा हस्तक्षेप भी शामिल है। अंत में मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि–

प्रकृति का विनाश करके तू कैसे अपना विकास कर पाएगा
स्वार्थ में अंधा होकर तू अपना ही कुछ गंवाएगा
नहीं हाथ लगेगा तेरे, कुछ भी
सिवाए आपदाओं के
एक दिन तू स्वयं ही विनाश के शिखर पर पहुंच जाएगा
समय है अभी भी हे मानव, तू जाग जा
प्रकृति की वेदना को तू अब तो पहचान जा
प्रण ले यह कि नहीं करेगा तू प्रकृति के साथ कोई भी छेड़खानी
अन्यथा भविष्य में,
तू स्वयं अपनी ही करनी पर पछताएगा।